bDdhloha सदी (२०१० से अब तक) के
izfrfuf/k fgUnh miU;klksa esa fdUuj foe'kZ

jk¡ph fo'ofo|ky;] jk¡ph

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

ekufodh ladk; ¼fgUnh foHkkx½

o"kZ % २०२४

'kks/k funsZ'kd %

डॉ० lquhrk ;kno

foHkkxk/;{k
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
(झारखण्ड)

'kks/kkFkhZ %

jhuk dPNi

यू.जी.सी नेट एवं प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

bDdhloha lnh ¼२०१० से अब तक½ dk ifrfuf/k fgUnh miU;klksa esa fdUuj foe'kZ

izLrkouk %

हम आधुनिक युग के २१वीं सदी में जीवन यापन कर रहे है। इस दौर में इंटरनेट प्रौद्योगिक ने इस कदर अपना जाल बिछाय है, कि हर तबके के लोग इससे अछूते नहीं है। तकनीकी क्रांति के आने से लोगों में जागरूकता की भावना विकसित हुआ है। कोरोना काल भले ही हजारों लोगों के लिए शोक का कारण बना होगा, किन्तु लॉकडाउन में आम आदमी भी 'सोशल मिडिया' के अधीन हो गया। जिसका परिणाम यह है कि लोग भिन्न–भिन्न समुदाय के संस्कृति व जीवन शैली से प्रभावित होने लगे तथा लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन आने लगा। उन के जीवन शैली में धीरे–धीरे बदलाव आने लगे।

साहित्य समाज का वह यथार्थ दर्पण है, जिसने समाज के तत्कालीन परिस्थितियों को हमारे समक्ष प्रदर्शित किया है। 19वीं सदी में विमर्श शब्द साहित्य में अपना स्थान कायम कर लिया था। विभिन्न विमर्श जैसे नारी विमर्श, दलित विमर्श, बाल विमर्श, आदिवासी विमर्श इत्यादि पर, विभिन्न लेखकों के द्वारा साहित्य रचना हो चूकि है। इसका परिणाम यह हुआ कि आज इनकी उपेक्षाए समाज में कम मात्रा में विद्धमान है।

2024 की यदि बात की जाए तो आज महिलाएं हर क्षेत्र में कार्यरत नजर आती है। बाल–मजदूर एवं बालविवाह अब न के बराबर दिखाई देती है। इसी प्रकार दलित, आदिवासी, वृद्धा विमर्श भी अपनी चरम सीमा पर स्थित है। सभी उपेक्षित समुदाय में उत्थान दृष्टिगोचर हो रहा है। किन्तु आज भी समाज में कुछ ऐसे समुदाय है जिन्हें तिरस्कार किया जाता है। वह है 'किन्नर समाज'। आजादी के 75 वर्ष के बाद भारत लगभग 74.04% (2011 के जन गणना के अनुसार) साक्षरता दर हो गई है। इसके बावजूद किन्नर समाज को

स्वीकार करने में कठिनाइयाँ हो रही है। आज भी किन्नर समाज को अपनी अस्तित्व व अधिकार के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

ऐसी बात बिलकुल नहीं है कि इनका अपना कोई अस्तित्व नहीं है। वैदिक साहित्य में किन्नरों की समाज में अस्तित्व व सम्मान होनी की बात कही गई है। 'रामायण' के अनुसार जब राम वनवास के लिए प्रस्थान कर रहे थे, तब किन्नर समुह बना कर, उन्हें अयोध्या लौटने का आग्रह करते है, किन्तु राम 14 वर्ष पश्चात पुनः लौटेंगे कहकर चले जाते हैं। किन्नर समुदाय राम के वापस आने तक उसी स्थान पर इंतजार करते है, जहाँ उन्होंने राम को आयोध्या लौटने का आग्रह किया था। साथ ही महाभारत में भी शिखण्डी नाम की एक गौण पात्र का वर्णन मिलता है। इतना ही नहीं स्वयं पांडवों को जब अज्ञातवास करना पड़ा था, तब अर्जुन ने भी 'बृहनल्ला' नामक किन्नर का रूप धारण कर आश्रय लिया था।

समकालीन सामाजिक परिवेश ने तो किन्नर समाज को, मानवाधिकार से वंचित रखा ही। साहित्यिक क्षेत्र में भी उन्हें उपेक्षा का शिकार बनना पड़ा। साहित्य में बिरले ही गौण पात्र के रूप में किन्नर मिलते है। पारिवारिक दृष्टिकोण से भी किन्नरों की स्थिति दयनीय होती हैं। मानक पैमाना की दृष्टिकोण से देखा जाए, तो समाज में दो लिंग के व्यक्ति निर्धारित किए गए है, किन्तु एक तीसरी लिंग भी समाज में मौजूद है जो न तो नर है और न ही नारी, जिसके कारण किन्नर वर्ग को सहजता से सामान्य वर्ग में शामिल नहीं किये जाते हैं। सामाजिक दुराचार व्यवहार के कारण परिवार के सदस्य भी अपने बच्चे को घर से निकालने के लिए मजबूर हो जाते है। किन्नरों की परिस्थिति इतनी दयनीय है कि उन्हें सामान्य लोगों की तरह रोजगार प्राप्त नहीं होते है। वे अपनी जीविका निर्वाहन के लिए शादी–विवाह, बच्चे के जन्म के अवसर पर, बस–स्टैंड, रेलवे स्टेशन जैसे सार्वजनिक स्थानों में ताली

बजा–बजा का भीख माँगने के लिए बाध्य हो जाते हैं। तिरस्कृत समुदाय होने के कारण इनके लिए शिक्षा का व्यवधान भी नहीं है, जो इनके हालात को और बदतर कर देता है। वे न चहते हुए भी अपनी जीविकोपार्जन के लिए भीख माँगने को मजबूर हो जाते है। सामान्य नागरिकों के सदृश्य किन्नरों में भी मानवता, कला, कौशल विद्‌यमान होते है किन्तु उन्हें अपने कला–कौशल को निखारने का अवसर नहीं मिलता है।

पिछली दो दशक में विश्व में कई औद्योगिकी, तकनीकी परिवर्तन आई है। इस क्रांतिकारी परिवर्तन ने मानवीय विचारधारा पर भी गहरा प्रभाव डाला है। इस परिवर्तनशील परिस्थिति ने उपेक्षित व बहिष्कृत वर्ग को उभारने का अवसर प्रदान किया है। २१वीं सदी में किन्नर समाज की उत्थान के लिए संविधान में कुछ कानून पारित किए गए हैं जिनके तहत इन्हें सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश करने की मान्यता दी गई है। सामान्य बच्चे की तरह शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश कर शिक्षा ग्रहण कर सकते है। इतना ही नहीं अब वयस्क किन्नरों को अपने मत के अनुसार वोट देने का अधिकार प्रदान किया जा चूका है।

प्रतिनिधि उपन्यासों में ‘यमदीप’ नीरजा माधव द्वारा रचित एक (2002) ऐसा उपन्यास है जिसमें पहली बार किन्नर मुख्य पात्र पर आधारित लिखा गया। इसके पश्चात् कई ऐसे उपन्यास सामने आये है, जिसमें किन्नरों की मुख्य भूमिका के रूप में दर्शाय गया हैं जिसमें तीसरी ताली, गुलाममंडी, मैं पायल, पोस्ट बॉक्स न0 203 नाला सोपारा इत्यादि। यमदीप उपन्यास को हिन्दी साहित्य जगत् में किन्नर पर आधारित प्रथम उपन्यास के रूप में माना जाता है लेखक नीरजा माधव ने नारी अस्मिता और शोषित–उपेक्षित वर्ग के उन सभी पहलुओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है, जिनकी ओर अन्य लेखकों की लेखनी पहूँचने में असमर्थ रही। इसके बाद 2011 में प्रदीप सौरभ की

उपन्यास 'तीसरी ताली' प्रकाश में आई, इसमें भी किन्नर के अकेलेपन और समाज के प्रति मौजूद अलगाव को दर्शाता है 'तीसरी ताली' किन्नर समुदाय के विवशता के दर्शाता है कि किस प्रकार से उन्हे अपनी जीविका के लिए तालियों का सहारा लेने के लिए विवश होना पड़ता है। 'गुलाममंडी' (2014) निर्मला भुराडिया द्वारा रचित यह उपन्यास गहन संवेदना स्वर को मुखरित करता है। इसमें बड़ी कुशलता से किन्नर समुदाय की समस्याओं की अभिव्यक्ति की गई है। 2016 में आई चित्रा मुद्गल द्वारा रचित उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स न0 203 नाला सोपारा' यह उपन्यास पत्रात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास में लेखिका ने एक किन्नर को अपने परिवार के प्रति अनन्य लगाव एवं समाज के प्रति तिरस्कृत भावना के प्रति मार्मिक द्वंद को दर्शाया गया है। जिसमें किन्नर अपनी माँ से लगाव के वजह से परिवार को त्यागना नहीं चहता, किन्तु समाज के अमानवीय व्यवहार की वजह से वह परिवार को त्यागने के लिए विवश हो जाता है। 'मैं पायाल' महेन्द्र भीष्म द्वारा रचित उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रत्येक किन्नरों के मौलिक जीवन व संघर्ष को दर्शाया गया है।

सन् 2000 के बाद ऐसे कई उपन्यास प्रकाश में आये है जिनमें किन्नर की विवशता, संघर्ष, अस्तित्व आदि की चर्चा की गई है। मैं इस शोध कार्य में अन्य उपन्यासों की गहन अध्ययन कर, इस विषय पर सफलता पूर्वक चर्चा करने की कोशिश करूँगी।

'kks/k fo"k; dh i`j.kk%

बचपन में जब मैं नाना–नानी के साथ भागलपूर से राँची के लिए रेलगाड़ी से यात्रा कर रही थे। तब मैंने किन्नरों के समूह को देखा। उनकी शरीरिक बनावट तो पुरूषों वाली थी। लेकिन वे साड़ी पहने हुए थे। मैं उन्हें एकटक देखते ही रह गई। नाना जी ने किन्नरों की ओर इंगित करते हुए बोले

कि ''इनसे दूर रहना नहीं तो ये बच्चों को अपने साथ ले जाते है।'' उस समय मैं लगभग 8 वर्ष की थी। नाना द्वारा कहीं बाते मुझे समझ में नहीं आया कि वे बच्चों को क्यों ले जाते है। किन्नरों का स्वरूप, वेशभूषा उनकी आवाज, मेरे मन में घर कर गया था। जब मैं कुछ बड़ी हुई तो बड़ी माँ के घर रहने के लिए आई। एक दिन भैया से बहस हो गई। मैंने उसे जोर से चिल्लाकर 'हिजड़ा' शब्द से संबोधित किया। उसने कहा ''तुम्हें हिजड़ा' शब्द का अर्थ समझ में आता भी है।'' मैंने कहा नहीं तो उसने कहा ''ऐसे लोग जो न तो औरत होते है और न ही मर्द।'' मैं गहरी सोच में पड़ गई कि ऐसे लोग होते भी है?

जब मैं वीमेंस कॉलेज में बी.ए. की पढ़ाई कर रही थी, तब पुरूलिया रोड़ में, किन्नरों को दुकानों से, रुपया माँगते देखी। मेरे मन में उनकी जीवन शैली के बारे में जानने की इच्छा जागी। मैंने यू–ट्यूब के माध्यम से किन्नरों के बारे में और गहराई से जानकारियाँ हासिल करने लगी। एक बार किन्नर 'गौवरी तिवारी' जी की भाषण वीडियो दिखी। उसकी करूणव्यथा, तिरस्कृत भावना, सुनकर बहुत पीड़ा महसूस हुआ। बडी माँ के घर में मुझे हर छोटी–छोटी बातों पर डाँट मिलती थी। तब मुझे एक अलगाव अकेलापन महसूस होता है। तब मेरे मन में एक प्रश्न उठा कि –इनकी क्या दशा होती होगी? जिन्हें पूरी सामाज तिरस्कृत भरी निगाहों से देखता है। उन्हें धर्म, स्वास्थ्यालय, रोजगार अन्य सामाजिक कार्य से भी बहिष्कार कर दिया जाता है। उनकी यही दयनीय दशा ने मुझे इस विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित करता है।

'kk/k fo"k; l: lcf/kr vU; 'kk/kdk;l%

विविध विश्वविद्यालयों में 'किन्नर विमर्श' पर शोध कार्य किए गए है तथा कुछ शोधकार्य हो रहे है। इनकी सूची निम्न है–

1. २1वीं सदी (2000–2020) के उपन्यासों में किन्नर विमर्श एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रखर (हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय–2023)
2. २1वीं सदी में प्रतिनिधि उपन्यासों में तृतीय लिंग जीवन–वाघमारें विजयकुमार प्रल्हाद (दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर)
3. लैंकिग प्रश्नों के परिदृश्य में हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन (जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू)
4. २1वीं सदी के कथा साहित्य में किन्नरों के प्रति समाज का वर्तमान दृष्टिकोण – कुमारी रिंकी (त्रिपुरा विश्वविद्यालय–2019)
5. हिन्दी उपन्यासों में किन्नर समाज एक विमर्श–सिंह सीमा बी. (मुम्बई विश्वविद्यालय 2022)
6. किन्नर लोक साहित्य–शर्मा बंशीरम (पंजाब विश्वविद्यालय–1969)
7. समकालीन हिन्दी उपन्यास में किन्नर समाज– कुमारी पार्वती (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय–2022)

उपर्युक्त शोध प्रबंधों में 'किन्नर विमर्श' से संबंधित विभिन्न आयामों पर शोध कार्य हो चूके है। एक शोधकर्त्री के द्वारा किन्नर विमर्श से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोण एवं रचनात्मक साहित्य का सुक्ष्मता से अध्ययन किया जाएगा तथा प्रस्तावित शोध विषय मौलिक एवं नवीन तरीके से किया जाएगा।

'kks/k fo"k; dh vko';drk ,oa egRo %

साहित्य स्तर पर लगभग सभी उपेक्षित समुदायों पर विमर्श कार्य प्रस्तुत किया जा चुके है। किन्तु आज भी कुछेक ऐसे समुदाय है, जिस में विमर्श की आवश्यकता है। २1वीं सदी से पूर्व स्वतंत्र रूप से किन्नर विमर्श पर अभिव्यक्ति खुल कर नहीं हुई थी। यह समाज सदियों से अपने अधिकार व सम्मान के लिए संघर्षरत है। वर्तमान कालीन इनकी परिस्थिति में कुछ परिवर्तन तो आए

है। दस्तावेजों में भी इनके कुछ अधिकरों को वर्णित (2014) किया गया है, फिर भी समाज घृणित दृष्टि से देखता है। इनके मौलिक अधिकार, सम्मान इत्यादि साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करना ध्येय है। मैं इस विषय पर पीएच.डी. कर इस उपेक्षित वर्ग को समाज के समक्ष इनके मानवतावादी दृष्टिकोण व इंसानियत को प्रस्तुत करन चाहती हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य bDdhloh lnh ¼२०१० से अब तक½ d: i:frfuf/k fgUnh miU;klk e: fdUuj foe'k के द्वारा किन्नर समुदाय के जीवन शैली, शिक्षा, अर्थ–व्यवस्था, मौलिक अधिकार इत्यादि का गहन अध्ययन कर समाज के समक्ष प्रस्तुत करूँगी। इसके साथ ही यदि सम्भव हो तो कुछ किन्नर के साक्षात्कार भी लेने की कोशिश करूँगी।

'kk/k dk;! dh i:fof/k %

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा विभिन्न प्रविधियों की सहायता ली जायेगी। जिसके अंतर्गत साहित्य शोध प्रणाली, पत्राचार पद्धति, साक्षात्कार पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। साथ ही संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, विविध पत्र–पत्रिकाएँ, इंटरनेट, वेबसाइट का उपयोग शोध कार्य के लिए किया जायेगा। इस शोधकार्य का सौंदर्य व रौनक बढ़ाने के लिए किन्नरों से साक्षात्कार लेने की प्रयास भी किया जायेगा।

: ij:[kk %

i:Lrkouk

i:Fke v/;k; % fdUuj foe'k & lkekU; ifjp;

1.1. किन्नर विमर्श : अर्थ, परिभाषा, अवधारण, और स्वरूप

1.2 किन्नर विमर्श : पृष्ठभूमि एवं विकास

1.3 किन्नर विमर्श : ऐतिहासिक दृष्टिकोण

1.4 भारतीय एवं पश्चात्य किन्नरों के मध्य भेद

f}rh; v/;k; % fdUuj foe'kZ dk ifr fofo/k nf"Vdks.k

21. किन्नर की पारिवारिक दशा, व मनोवृति

2.2 जीवन शैली का संवेगात्मक, भावनात्मक व्यथा

2.3 विविध दृष्टिकोण में किन्नरों का अस्तित्व

  2.3.1 समाजिक

  2.3.2 राजनीतिक

  2.3.3 धार्मिक

  2.3.4 आर्थिक

  2.3.5 सांस्कृतिक

  2.3.6 संवैधानिक

  2.3.7 साक्षात्कार

r`rh; v/;k; : bDdhloh ¼२०१० से अब तक½ lnh dk ifrfuf/k miU;klks esa fpf=r fdUujksa dh ekfeZd fp=.k

3.1 'यमदीप' उपन्यास में मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.2 'जिदंगी 50–50' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.3 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' उपन्यास मे किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.4 'गुलाममंडी' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.5 'मैं पायल' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.6 'किन्नर कथा' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.7 'पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का माार्मिक चित्रण

3.8 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

3.9 'मैं हिजड़ा .... मैं लक्ष्मी' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण।

3.10 'तीसरी लोग' उपन्यास में किन्नर मुख्य पात्रों का मार्मिक चित्रण

prqFkZ v/;k; % izfrfuf/k miU;klksa esa fdUuj vf/kdkjksa ds fofo/k vk;ke

4.1 प्रतिनिधि उपन्यासों में किन्नरों की सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक आयाम

4.2 प्रतिनिधि उपन्यासों में किन्नरों की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सांवैधानिक आयाम

iape v/;k; % ^fdUuj foe'kZ* ij jfpr fofHkUu izfrfuf/k miU;klksa dk fofo/k v/;;u

i. भाषा शैली

ii. प्रतीक

iii. बिम्ब

iv. शब्द–चयन

milagkj

ifjf'k"V

lanHkZ xzUFk

i. आधार ग्रंथ

ii. सहायक ग्रंथ

iii. पत्र पत्रिकाए

iv. वेब

आवश्यकता पड़ने पर इस शोध अन्वेषण में बदलाव किया जा सकता है।

जिन्दंगी 50 50	भगवंत अनमोल
यमदीप	नीरज माधव
गुलाममंडी	निर्मल भुराडिया
पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा	चित्र मुदगल
मैं पायल	महेन्द्र भीष्म
किन्नर कथा	महेन्द्र भीष्म
पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन	मानोबी बंधोपाध्यय
मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी	लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी
श्रापित किन्नर	डॉ० मुक्ति शर्मा
तीसरी लोग	गीतांजली चटर्जी
तीसरी ताली	प्रदीप सौरभ
मेरे हिससे का धूप	नीना शर्मा 'हरेश'
सिसकती दास्तान	डॉ0 लता अग्रवाल
न नर, न नारी, फिर भी नारायण	देवदत्त पहनायक जैरी जॉनसन
दरमियाना	सुमाम आखल
समकालीन हिन्दी साहित्य में किन्नर विमार्श	डॉ0 लोकेश्वर प्रासाद
हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन	डॉ० दिलिप मेहरा
हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	डॉ0 मधु खराटे
21वी शती के हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन	डॉ0 सनोज पी.आर
किन्नर विमर्श : कल आज और कल	सं: फसलता सरोज